पितृसत्तात्मकता व्यवस्था को चुनौती देती 'कुच्ची का कानून'

रीता जायसवाल

हिन्दी साहित्य में शिवमूर्ति ऐसे समकालीन रचनाकार हैं, जो स्त्री, गाँव, गरीब के उस यथार्थ को दिखलाते हैं जिस पर जल्दी किसी की नजर पहुँचती नहीं है। यह यथार्थ केवल उनके घटना या कथानक में ही नहीं रहती, बल्कि उनके चरित्र, भाषा, संवाद आदि में भी झलकती है। वे अपनी रचनाओं में गाँव का चित्रण उतनी ही कुरूपता और खुदरता के साथ करते जितना गाँव में होता है। वे यथार्थ के रचनाकार हैं, न कि सौंदर्य के। "भाषा पर शिवमूर्ति की पकड़ गजब की है। अपनी भाषा से वे पूरा दृश्य पैदा कर देते हैं। उनके बिंब इतने सजीव होते हैं कि कहानियाँ पढ़ते हुए आप पुस्तक से निकलकर उनके द्वारा वर्णित गाँव में टहल रहे होते हैं। जब वे लिखते हैं कि घर...घर...है। भाषा से दृश्य बनाने की ऐसी क्षमता बहुत कम लोगों में होती है।" शिवमूर्ति की किसी भी रचना का प्रकाशित होना हिंदी साहित्य जगत में पाठकों के लिए चर्चा का विषय बन जाती है। लगभग तीन साल के अंतराल में आई कहानी 'कुच्ची का कानून' साहित्यिक पत्रिका 'तद्भव' में छपी एक अनमोल एवं लीक से हटी रचना है। इस उपन्यास के शुरुआती दौर को पढ़ कर मानो ऐसा लगता है कि किसी गाँव की कम पढ़ी-लिखी आम स्त्री की कहानी है। पर जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, वैसे-वैसे एक गाँव की स्त्री का विचार शहरी स्त्री के विचार से काफी प्रगतिशील लगता है। यह कहानी अपने आप में एक नया आयाम तैयार करती है, जो एक नई सोच के साथ हमारे सामने आती है। इस कहानी को पढ़ने के बाद पाठकों को मानो कुच्ची उसके घर की ही स्त्री लगती है। "शिवमूर्ति ने अपनी कहानियों से सिद्ध किया कि कथारस वह चीज है जिसके साथ रच-बस कर अंतर्वस्तु पाठक की आत्मा तक उतर जाय और उसे रोमांच और सौंदर्य से भर दे या पाठकों को ऐसी बेचैनी और तनाव में ले जाये कि उसकी नींद ही उड़ जाय।" इन्हीं सब कारणों से